

सत्यनारायण जी की आरती | By Various Artist |

जय लक्ष्मी रमणा, श्री जय लक्ष्मी रमणा ।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

रत्न जडित सिंहासन अद्भुत छवि राजै ।
नारद करत निरंतर घंटा ध्वनि बाजै ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

प्रकट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो ।
बूढ़ा ब्राह्मण बनकर कांचन महल कियो ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

दुर्बल भील कटारो, जिन पर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा तिनकी विपत्ति हरी ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीन्हों ।
सो फल भोग्यो प्रभु जी फिर-स्तुति कीन्हों ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरयो ।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीन्हों दीनदयाल हरी ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल, मेवा ।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावै ।
तन-मन सुख सम्पत्ति मनवांछित फल पावै ॥

श्री जय लक्ष्मी रमणा ।।

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a4%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%a8%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%af%e0%a4%a3-%e0%a4%9c%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%86%e0%a4%b0%e0%a4%a4%e0%a5%80-by-various-artist/>